15.4.2020

M.F.A - II Sem
History of Indian Sculpture (2002T)

Theory Course-IV
Unit-III

चंदेल राजवंश - प्रारम्भिक चन्देलु शासक हर्षदेव के काल में खजुराहो का मातंगेश्वर का मन्दिर बना उसका पुत्र यशोवर्मन के समय में लक्ष्मण मन्दिर का निर्माण हुआ। इनके बाद विश्वनाथ, पार्श्वनाथ मन्दिर बने। शक्तिशाली शासक विद्याधर के समय में खजुराहो व कान्दरिया महादेव मन्दिर का निर्माण हुआ

खजुराहो (नागर शैली) - खजुराहो 10वी-11वी शताब्दी के नागर शैली में बने हुए हिन्दू मन्दिरों के लिए विश्व विख्यात है। यह मध्य-प्र० के उत्तरी भाग में 50 कि.मी० दूरी पर स्थित है। खजुराहो की भव्य कला वैभव का निर्माण 950 - 1050 ई० के मध्य हुआ। खजुराहो में निर्मित मन्दिर जैन व वैष्णव तथा ~~जैन~~ मन्दिर धर्म से सम्बंधित है।

खजुराहो नामकरण - खजुराहो नाम के विषय में विभिन्न मत हैं। किंवदन्ती के अनुसार खजुराहो का नाम इसलिए पड़ा क्योंकि नगर के एक प्रमुख द्वार के दोनों तरफ सोने के खजूर के वृक्ष सुसाज्जित है। चन्दरदाई के पृथ्वीराज रासो में भी खजुराहो का उल्लेख "खजूरपुरा" या 'खाजीनीपुरी' के नाम से आता है। ऐसा प्रतीत होता है। कि इसक्षेत्र में खजूर के वृक्ष बहुतू थे। खजुराहो के भव्य कला का निर्माण चन्देल वंशीय शासको चंग, विद्याधर (1018-29 ई) किर्तिवर्मन और मदनवर्मन के समय में (12वी सदी के अन्त तक) हुआ था।
खजुराहो के मन्दिर को प्रमुखत: तीन समुहो के रुप में देखा जा सकता है।

(1) पश्चिमी समुह मन्दिर ——

- चौंसठ योगिनी मन्दिर — यह खजुराहो का सबसे प्राचीन लगभग दशवी शताब्दी का बना है। यहां 64 योगिनियों की पूजा तान्त्रिक द्वारा की जाती है। लावा पत्थर की शिला से निर्मित यह मन्दिर 54 मी० ऊंचा व ऊपर की ओर खुला है। इसमे 64 योगिनियो की प्रतिमा छोटी-छोटी गर्भगृहो के साथ बनायी गयी थी। अब केवल 35 मूर्तियां ही शेष बची हैं।
- — लालगुंवा मन्दिर - यह पश्चिमी मुखी व शीखर पिरामिड के आकार का है। यह ललगुंवा सागर के किनारे भगवान शीव के लिए बनवाया गया था। लावा पत्थर से बने इस मन्दिर का गर्भगृह खाली व नं० के सामने नन्दी की सुन्दर प्रतिमा बनी है।

मंगतेश्वर मन्दिर – चन्देल राजाओ द्वारा बनवाया गया यह पहला मंदिर है। लोकमत के अनुसार इसमे निरन्तर पूजा होती आयी है। यहां राजा हर्षवर्मन ने "मरकतमणी नामक मणि की स्थापना की थी। जिसे स्वयं भगवान शिव ने युधिष्ठिर को दी थी। बालु पत्थर से निर्मित यह मन्दिर ब्रह्मा मन्दिर का ही विशाल रूप है। गर्भगृह में जंघा व शिवलिंग की स्थापना है। मन्दिर का शिखर पिरामिड शैली का व छत वर्गाकार विशाल है। ऊपर शिखर पर मुकुट से मन्दिर का सौन्दर्य दोगुना हो जाता है।

- बराह मन्दिर – लावा पत्थर से निर्मित नींव व बलुआ पत्थर से आयताकार मण्डप के रूप में बना है। इसका शिखर १४ स्तम्भो पर खड़ा है। इसमे भगवान विष्णु के वाराह रूप को दिखाया है। इसमे एक ही शिला से उत्कीर्ण विशाल प्रतिमा है। लम्बा २.६ मी० है। और इनके साथ अन्य देवी देवताओ की मूर्ति भी विद्यमान है। वराह के नीचे शेषनाग व ऊपर पृथ्वी को दिखाया है। मन्दिर छत कमल पुष्पों के आलेखन से सुसज्जित है।

- लक्ष्मण मन्दिर — भगवान विष्णु का यह मन्दिर यशोवर्मन ने ९३० ई० मे बनवाया था। इनका दूसरा नाम लक्ष्मण वर्मन भी था इस पर ही मन्दिर का नाम पड़ा। यह मन्दिर मथुरा के १६ हजार शिल्पकारो ने बनायी था। और यह ७ वर्ष की अवधि मे बनकर तैयार किया।

- प्रवेश मन्दिर – यह मन्दिर गन्धार व पंचायतन शैली मे विष्णु भगवान का मन्दिर है। जो वैकुण्ठ का प्रतीक है। चारो कोनों मे चार उपमन्दिर है। जो प्रमुख देवता व पारिवारिक देवताओ के है। तथा मन्दिर के ठीक सामने गरुड का मन्दिर होगा जो अब देवी ब्राह्मणी की प्रतिमा है। प्रमुख मन्दिर के प्रवेश द्वार पर भगवान सूर्य की आदित्य रूप मे प्रतिमा है। उन्हे हाथ मे कमल के दो फूल लिए रथारूढ़ दिखाया है। यह बालू पत्थर से बना है।

मन्दिर के बायी ओर भगवान् गणेश की प्रतिमा देखने को मिलती है। मन्दिर मे बेलबूटे व हाथियो की लाइन ऊपर छोटी-छोटी प्रतिमाओ की लाइने है। जिनमे नृत्य, संगीत, शिकार, युद्ध मिथुन इत्यादि के दृश्य है। अर्थात इनमें उस युग की झॉकी है।

इन पंक्तिबद्ध मूर्तियों मे नायक नायिकाओ का बड़ा ही सुन्दर चित्रण किया गया है। शकुन्तला की विभिन्न मुद्राओं का चित्रण है। राजा रानी का आलिंगन मुद्रा बहुत भावप्रवण है।

[signature]
डा० पूर्णिमा वशिष्ठ
ललित कला विभाग